IJAER/July- August- 2021/Volume-10/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

जैन धर्म में निहित शैक्षिक मूल्य

डॉ. देवीशंकर शर्मा

सह आचार्य जैनोलॉजी

एसबीडी राजकीय महाविद्यालय सरदारशहर

सार

अध्ययन का उद्देश्य जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन करना था। अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों एवं वचनों पर आधारित ग्रन्थों को प्रमुख आधार बनाया गया। अध्ययन हेतु ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप मे जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन किसी बाल– विशेष, वर्ग–विशेष के लिये न होकर सार्वकालिका, सार्वदेशिक हैं। अर्थात जैन दर्शन का शिक्षा–दर्शन सब को पुरूषार्थ और आत्मनिर्भता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि तुमने दुसरो के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हे विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा । दुसरे शब्दो मे जैन शिक्षा–दर्शन मे, शिक्षा का स्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रशासन एवं अनुशासन मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति शिक्षा को सही आधार प्रदान कर सकता है।

परिचय:

जैन धर्म में शिक्षा

जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। यह स्वतंत्र है और किसी धर्म की शाखा या शाखा नहीं है। यह धर्म की एक आदर्श प्रणाली होने के नाते एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विशेष रूप से भारतीय दर्शन और दुनिया में अहिंसा, सत्य और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के विचार में इसका योगदान महत्वपूर्ण और महान मूल्य का है। इस लेख का शीर्षक दो महत्वपूर्ण शब्दों पर तुरंत प्रहार करता हैरू शिक्षा और जैन धर्म। चूंकि हम जैन धर्म में शिक्षा के स्थान और महत्व की जांच करना चाहते हैं, आइए हम इस दृष्टिकोण से जैन धर्म – इसके दर्शन और मौलिक सिद्धांतों पर ध्यान दें। जैन धर्म की दृष्टि से हम शिक्षा को एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में – विकास की एक प्रक्रिया, जीवन के उच्चतम लक्ष्य का मार्ग के रूप में चर्चा करेंगे।

जैन धर्म:

जैन धर्म, भारतीय दर्शन की एक प्रमुख दार्शनिक प्रणाली होने के अलावा, एक आदर्श धर्म है, शायद सबसे पुराना जीवित धर्म है। इसने विशेष रूप से भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के साथ–साथ मानवीय पीड़ा और दर्द के सकारात्मक, प्रगतिशील और शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में काम किया है। एक महान पाश्चात्य इतिहासकार और विद्वान डॉ. विंटरनिट्ज़ ने जो लिखा है, उस पर गौर करना एक जैन के लिए बड़े गर्व की बात होगी। ष्जैनों ने बौद्धों की तुलना में कहीं अधिक हद तक अपने धार्मिक साहित्य के क्षेत्र से परे अपनी गतिविधियों का विस्तार किया है, और दर्शन, व्याकरण, शब्दावली, काव्य गणित, खगोल विज्ञान और धर्मनिरपेक्ष विज्ञान में उनके क्रेडिट के लिए यादगार उपलब्धियां हैं। ज्योतिष, और यहां तक कि राजनीति के विज्ञान में भी। इन श्अपवित्रश कार्यों का भी किसी न किसी रूप में धर्म से कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य ही रहता है। दक्षिणी भारत में, जैनों ने द्रविड़ भाषाओं, तमिल और तेलुगु और विशेष रूप से कन्नड़ साक्षरता भाषा के विकास में भी सेवाएं प्रदान की हैं। इसके अलावा, उन्होंने गुजराती, हिंदी और मारवाड़ी में

काफी मात्रा में लिखा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनका भारतीय साहित्य और भारतीय चिंतन के इतिहास में कोई छोटा स्थान नहीं है।

जैन धर्म जीवन का एक अभिन्न दृष्टिकोण लेता है। यह श्समनासुत्तमश में चर्चा करता है, जीवन के उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में सार्वभौमिक मूल्य। जैन धर्म के अनुसार जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य या लक्ष्य निर्वाण या मुक्ति प्राप्त करना है। कैसे करें, इस लक्ष्य को प्राप्त करें? एन उनकी पुस्तक श्तत्त्वार्थ–सूत्रश में आचार्य उमास्वती कहते हैंरू श्निर्वाण या मोक्ष को सही विश्वास, सही ज्ञान और सही आचरण से एक साथ प्राप्त किया जा सकता है।श मुक्ति के मार्ग के लिए। हम तीनों को पथ पर चलने के लिए होना चाहिए। भगवान महावीर कहते हैं, "ज्ञान से व्यक्ति पदार्थों की प्रकृति को समझता है; श्रद्धा से उन पर विश्वास करता है, आचरण से कर्मों के प्रवाह को समाप्त करता है और तपस्या से पवित्रता प्राप्त करता है। इस प्रकार जैन धर्म में ज्ञान मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन फिर ज्ञान क्या है, इसका अर्थ, दायरा और प्रकार क्या है? इसके लिए आइए ज्ञान के जैन सिद्धांत पर एक व्यापक नज़र डालें।

ज्ञान का जैन सिद्धांत:

"ज्ञान की अवधारणा के बारे में जैन विचारकों का विचार काफी ऐतिहासिक है और श्एपिस्टेमोलॉजीश के क्षेत्र में इसका बहुत महत्व है– जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है, और आत्मा की प्रकृति के संबंध में इसका अपना सिद्धांत है। जैन धर्म के अनुसार आत्मा में सभी चीजों को जानने की अंतर्निहित क्षमता है। आत्मा की शुद्धता जितनी अधिक होगी, जानने की क्षमता उतनी ही अधिक होगी। आत्मा को जानने में बाधाएँ कर्म हैं। कार्मिक आवरणों के पूर्ण विनाश से श्अनंत ज्ञानश (अनंत ज्ञान) प्राप्त होगा। ज्ञान (ज्ञान) जैनों के अनुसार, ष्आत्मा का आंतरिक, अंतर्निहित, अविभाज्य और अविच्छेद्य गुण है, जिसके बिना कोई भी आत्मा मौजूद नहीं हो सकती है। ज्ञान आत्मा की अवधारणा और उसकी मुक्ति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ज्ञान के जैन सिद्धांत के अनुसार आत्मा में चेतना (चेतना) और समझने की शक्ति इसके सबसे प्रमुख अंतर्निहित गुण हैं। चेतन के रूप में, आत्माएँ निम्नलिखित तीन तरीकों से अनुभव करती हैं। कुछ केवल कर्म के फल का अनुभव करते हैं; कुछ उनकी अपनी गतिविधि; और कुछ फिर, ज्ञान। 3 कुण्ड – कुण्डाचार्य मानते हैं कि "उपयोग या समझ दो प्रकार की होती है; अनुभूति और सनसनी। नेमीचंद्र कहते हैं, ष्समझ को दो प्रजातियों में बांटा गया है। दर्शन या सनसनी और ज्ञान या अनुभूति। उमा स्वाति कहती हैं, श्समझ है

आत्मा की विशिष्ट विशेषता। यह दो प्रकार (अर्थात् ज्ञान या अनुभूति और दर्शन या संवेदना) है। पहला आठ प्रकार का होता है और दूसरा चार प्रकार का होता है। 4 आचार्य नेमीचंद्र, दर्शन की व्याख्या करते हुए कहते हैं, ष्बिना विशिष्टताओं (विसा) के सामान्यताओं (सामन्य) की वह धारणा जिसमें कोई ग्राह्यता या विवरण नहीं है, दर्शन कहलाता है।" 5 "दर्शन या संवेदना चार प्रकार की होती है – दृश्य (चक्षुसा), गैर–दृश्य (अक्षुसा), भेदक (अवधि दर्शन) और शुद्ध (केवल दर्शन)ष* 6 जैन विद्वान अनुभूति या ज्ञान को दो भागों में विभाजित करते हैंरू वैध ज्ञान और झूठा ज्ञान। वैध ज्ञान पाँच प्रकार का होता हैरू संवेदी (मति या अभिनिबोधिका), आधिकारिक (श्रुत) क्लैरवॉयंट (अवधी), टेलीपैथिक (मनः पर्याय) और शुद्ध (केवल)। कुमति, कुश्रुत और विभंग मति, श्रुत और अवधी ज्ञान के तीन मिथ्या रूप हैं। इस प्रकार, ज्ञान के जैन सिद्धांत के अनुसार अनुभूति आठ प्रकार की होती हैरू पाँच वैध और तीन मिथ्या। इस स्तर पर हम इन आठ प्रकारों में से प्रत्येक के विस्तृत विवरण से बचते हैं। ज्ञान के सिद्धांत को समाप्त करने में हम निश्चित रूप से ध्यान देंगे कि यह अपने तत्वमीमांसा, नैतिकता और आत्मा के दर्शन के साथ काफी संगत है। यह आत्मा की जानने की क्षमता के दायरे और सीमा को समझने के लिए एक तर्कसंगत दृष्टिकोण और एक उपयुक्त दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

कारण, अंतर्ज्ञान और विश्वास:

आइए कारण, अंतर्ज्ञान और विश्वास को समझें और उन्हें जैन धर्म के दृष्टिकोण से देखें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि केवल ज्ञान ही शिक्षा नहीं है और फिर, जैसा कि हमने पहले जैन धर्म में उल्लेख किया है कि केवल ज्ञान ही आपको मुक्ति की ओर नहीं ले जा सकता है। तो रीज़न के बारे में बात करते हुए, हमें पता होना चाहिए कि रीज़न अनिवार्य रूप से एक मानवीय घटना है। व्युत्पन्न रूप से, श्कारणश शब्द श्अनुपातश अर्थ संबंध से लिया गया है। "सभी के सबसे सामान्यीकृत अर्थों में, कारण को बुद्धि के तर्कसंगत तत्व के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"7 कारण केवल अमूर्त या औपचारिक नहीं है बल्कि यह उच्च और सिंथेटिक है। ष्यह क्रिया में संपूर्ण मन है, अविभाज्य जड़ जिससे अन्य सभी संकाय उत्पन्न होते हैं" 8 व्यक्ति को कारण और बुद्धि के बीच का अंतर जानना चाहिए। बुद्धि अमूर्त और आंशिक है। कारण व्यापक और सिंथेटिक है। कारण बुद्धि से श्रेष्ठ है।

अंतर्ज्ञान अनिवार्य रूप से एक व्यक्तिपरक अनुभव है, और कारण की तरह, ज्ञान का एक स्रोत है। अंतर्ज्ञान कारण से ज्ञान का एक उच्च स्रोत है। सहज ज्ञान पहचान से ज्ञान है, यह प्रत्यक्ष ज्ञान है, जो अंतिम और सर्वोच्च है। कारण सीमाओं के तहत काम करता है जबकि अंतर्ज्ञान ऐसी सीमाओं से मुक्त होता है। हालांकि अंतर्ज्ञान अधिक है, इसे व्यक्त करने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है। ष्अंतर्ज्ञान कारण से परे है, हालांकि कारण के खिलाफ नहीं है। यह वास्तविकता के प्रति पूरे मनुष्य की प्रतिक्रिया है, इसमें तर्क की गतिविधि भी शामिल है"

आस्था को हमेशा विशेष रूप से कारण के अनुकूल समझने की आवश्यकता होती है। भारतीय दर्शन में और जैन धर्म में भी कारण और आस्था दोनों को ज्ञान के मान्य स्रोतों के रूप में स्वीकार किया जाता है। वास्तव में आस्था के लिए कारण को आवश्यक माना जाता है। जैन धर्म में, जो विश्वास प्रकट हुआ है उसका समर्थन करने के लिए कारण एक महत्वपूर्ण साधन है। इसे ही हम श्कारण कीश विश्वास की सेवाश कहते हैं। स्वामी परमानंद ने अपनी पुस्तक ष्फेथ इज पावर" में कहा है कि आस्था और कारण एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं, वे एक दूसरे के पूरक हैं। यह भी जानना चाहिए कि आस्था विश्वास नहीं है। वे भिन्न हैं। विश्वास सतही होता है और आसानी से हिल जाता है, लेकिन विश्वास हमें मजबूत और दृढ़ बनाता है। आस्था कोई अमूर्त अनिश्चितकालीन भावना नहीं है, यह हम सभी के लिए आवश्यक है। विश्वास है और हमेशा इसके तीन पहलुओं में समझा जाना चाहिएरू विश्वास स्वयं में, मानवता में और ईश्वर में है। ये पहलू अन्योन्याश्रित हैं और अलग–थलग नहीं हैं।

पश्चिम में कारण और आस्था पर लंबी चर्चा और ग्रंथ लिखे गए हैं। सभी नैतिक अनुभवों और धर्म के प्रति दृष्टिकोण के विशेष संदर्भ में, प्रो. जे.एफ. रॉस द्वारा विश्वास और कारण पर चर्चा की गई है। वह कहता है कि षविश्वास की गतिविधि और कारण की गतिविधि दोनों ही हमेशा ज्ञान तक पहुँचने के लिए होती हैं। इसका एक पर्याप्त और महत्वपूर्ण दावा है। विश्वास और तर्क दोनों ही हमेशा परमेश्वर के ज्ञान और मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा तक पहुँचते हैं"10। जैन धर्म में आस्था न केवल ज्ञान का स्रोत है बल्कि दृष्टि का भी है। जैन धर्म में आस्था (श्रद्धा) एक अवस्था और एक गतिविधि दोनों है। जैन शास्त्रों के अनुसार षमित्रता (मैत्री), गतिविधि (प्रमोदा), करुणा (कर्म) और तटस्थता (मध्यस्थ) चार गुण हैं जो मूल रूप से धर्म की नींव में आवश्यक हैं" 11 आचार्य श्री हरिभद्र सूरी समभाव या सही विश्वास (सम्यक) को बहुत महत्व देते हैं – कर्म)। तो जैन अवधारणा के अनुसार सही विश्वास धार्मिक गतिविधि (साधना) की नींव है।

आइए उपरोक्त सभी शब्दों को जैन दृष्टिकोण से समझें। जैन धर्म के अनुसार यह केवल मानव आत्मा (जीवात्मा) है जो उच्चतम स्तर की पूर्णता प्राप्त कर सकती है। सभी आत्माएँ परिपूर्णता और सिद्धियों से युक्त हैं। ष्परिमित में निहित अनंत। यही कारण है कि सीमित हमेशा अपनी सीमितता को तोड़ने और पूर्ण स्वतंत्रता तक पहुंचने के लिए संघर्ष कर रहा है। "12 जैन धर्म अद्वितीय रूप से रखता है कि अनंत शक्ति प्रत्येक आत्मा में छिपी हुई है। अपने शत्रुओं को हराने के लिए अत्यधिक आत्म–प्रयास करने की आवश्यकता हैरू भगवान महावीर कहते हैं, "अपने आप से लड़ो। बाहरी शत्रुओं से क्यों लड़ना? जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह स्वयं के माध्यम से सुख प्राप्त करेगा। आत्म–प्रयास सही ज्ञान (सम्यक–झाना) सही दृष्टि या विश्वास (सम्यक दर्शन) और सही आचरण (सम्यक–कारित्र) की एकता प्राप्त करने का एक प्रयास है। जोर भी जैन धर्म में जीवन और शिक्षा की मूल भावना की ओर जाता है। ष्जैन धर्म की मूल भावना श्जियो और जीने दोश है, समझ, सहिष्णुता, व्यवस्थित सहयोग और शांतिपूर्ण सहयोग का जीवन जीने के लिए, नहीं,

अभी भी पूर्ण और महान सह–संबंध14 ये गुण कितने अद्भुत हैं हम शिक्षा की वर्तमान प्रणाली में मूल्य शिक्षा के साथ–साथ जीवन कौशल के माध्यम से एक बच्चे में आधुनिक दिनों में परिलक्षित होते हैं!

सही विश्वास और सही आचरण:

आचार्य उमास्वामी या उमास्वती ने अपनी पुस्तक ष्तत्वार्थसूत्रष् में सही विश्वास (सम्यग्दर्शन) के चार पूर्वापेक्षाओं के बारे में विस्तार से बताया है, वे हैं (प) प्रसमा (शांति और समभाव से खुशी), (पप) सामवेग (धार्मिकता के लिए महान उत्साह और बुरे कर्मों से बचना)) (पपप) अनुकंपा (करुणा – नकारात्मक और सकारात्मक दोनों। नकारात्मक अहिंसा है – अहिंसा, सकारात्मक में यह करुणा, सद्भावना, साथी भावनाएं हैं) और (पअ) आस्तिक्य – (सत्य के सिद्धांतों में विश्वास)।

सम्यग, दर्शन से व्यक्ति का संपूर्ण परिवर्तन होता है। श्जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण, दुनिया और सांसारिक चीजों के प्रति उनका दृष्टिकोण, दूसरों के साथ उनके संबंधों का आधार, उनके मूल्य सभी बदल गए हैं।श उनके पास अनुशासन, आत्म संयम, पांच महाव्रतों (गैर–संयम) के बाद जीवन जीने का एक तरीका है। चोट, सत्यवादिता, चोरी न करना, कामवासना और धन या सांसारिक वस्तुओं को न रखना। इसके समर्थन में पाँच समितियाँ – सावधानी (चलने, बोलने, खाने, रखने और प्राप्त करने और मल त्यागने में) और तीन आत्मसंयम मन, वाणी और शारीरिक कर्म। जैन धर्म इन बारह प्रतिबिंबों और दस गुणों (क्षमा, विनम्रता, सरलता, सच्चाई, पवित्रता, आत्म संयम, तपस्या, त्याग, अपरिग्रह और पवित्रता) को आवश्यक बताता है। इस प्रकार श्सम्यग्दर्शनश – सही विश्वास जैन धर्म में एक गृहस्थ को शांति और खुशी प्राप्त करने के लिए ढालना या शिक्षित करना।श यह दुनिया में सामाजिक सद्भाव और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की सुविधा भी देता है।

जब हम जैन धर्म में शिक्षा की बात करते हैं, तो इसके गुणव्रतों और शिक्षाव्रतों या शैक्षिक प्रतिज्ञाओं का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। ये व्रत आत्म अनुशासन अभ्यास हैं और व्यक्तिगत कल्याण, सामाजिक सद्भाव और विश्व शांति के लिए आवश्यक माने जाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा की आधुनिक व्यवस्था में बारह व्रतों का पालन बहुत महत्वपूर्ण और अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शिक्षा:

आइए हम 'शिक्षा' की अवधारणा और जीवन में इसकी भूमिका को समझें। अपने बहुत ही सरल अर्थ में शिक्षा एक प्रक्रिया है; यह एक प्रशिक्षण है। शरीर, मन और आत्मा का प्रशिक्षण ही शिक्षा है। इस प्रशिक्षण के अपने लक्ष्य और उद्देश्य हैं। शिक्षा अधिक प्रभावी ढंग से और साथ ही अधिक कुशलता से जीवन जीने का एक साधन है। संक्षेप में शिक्षा का उद्देश्य छात्र या शिक्षार्थी का शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना और बच्चे को बुद्धिमान बनाना है, यह बच्चे को शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के लिए योग और अन्य शारीरिक व्यायाम प्रदान करता है, यह अपनी सांस्कृतिक और जीवन कौशल गतिविधियों के माध्यम से एक बच्चे को आचरण में अच्छा बनाता है और अंत में यह एक बच्चे में मूल्यों को विकसित करता है और बनाता है उनका चरित्र सदाचारी। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। डॉ. एस. राधाकृष्णन के शब्दों में, "शिक्षा का उद्देश्य हमें मानवीय गुणों और जीवन की सरल शालीनताओं को समझने के लिए प्रशिक्षित करना है। हमें क्रूरता और शक्ति के लिए नहीं बल्कि प्रेम और दया के लिए शिक्षित करना चाहिए। हमें प्रकृति के लिए ताजगी महसूस करने, मानवीय जरूरतों के प्रति आत्मा की संवेदनशीलता विकसित करनी चाहिए। हमें मन की स्वतंत्रता, हृदय की मानवता, व्यक्ति की अखंडता को बढ़ावा देना चाहिए। सही शिक्षा से व्यक्ति सही ज्ञान, सही दृष्टि और विश्वास, सही आचरण और कामुक सीमा पर विजय प्राप्त करता है। मुक्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग है। निस्संदेह इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण है। यह देखने के लिए कि एक सच्ची शिक्षा–प्रणाली के विचार जैन जीवन पद्धति में कैसे परिलक्षित होते हैं, आइए पहले हम संक्षेप में शिक्षा को देखें कि यह कैसी है और भविष्य में कैसी होनी चाहिए। प्राचीन भारत में जो शिक्षा व्यवस्था थी, उस पर बड़ी चर्चा से बचते हुए आइए जानते हैं सत्रहवीं शताब्दी से लेकर आज तक की प्रगति और विकास की धारणा वाली शिक्षा और भविष्य की शिक्षा। इसे जानने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

को जानें। वेद, उपनिषद और जैन विहित साहित्य कहते हैंरू षशिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है।ष ज्ञान मनुष्य में निहित है, ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब भीतर है। जैन धर्म के अनुसार भी आत्मा में सभी अनंत शक्तियाँ हैं – अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति, अनंत विश्वास और अनंत आनंद। ज्ञान और इन सभी अनंतों पर पर्दा पड़ा हुआ है और शिक्षा केवल अनावरण है। शिक्षा का अर्थ है नेतृत्व करना, आगे लाना, शिक्षित करना – प्रत्येक मनुष्य के भीतर छिपी, छिपी, सुप्त क्षमता को शिक्षित करना। शिक्षा पर श्री अरबिंदो लिखते हैं, ष्सच्ची शिक्षा का पहला सिद्धांत यह है कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता।ष

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को ध्यान में रखते हुए, जिसमें उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, परिवर्तन मुख्य रूप से अवधारणा, दृष्टिकोण और मूल्यों में परिवर्तन के कारण है जो कि बदल गए हैं। मुक्ति के लिए ज्ञान की जगह हमारे पास भौतिक सुख–सुविधाओं की तकनीक है; भीतर खुशी और दिव्यता के बजाय, हमारे पास वैश्वीकृत भौतिक दुनिया में बाहर सफल होने की लालसा है। उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास, हालांकि आवश्यक है, निश्चित रूप से पर्याप्त नहीं है। हमें यह जानने की जरूरत है कि सूचना ज्ञान नहीं है, और बुद्धि दृष्टि नहीं है। वेद कहते हैं, "बौद्धिक समझ केवल निम्न ज्ञान (बुद्धि) है; एक और और उच्च ज्ञान (बुद्धि) है जो बुद्धि नहीं बल्कि दृष्टि है, समझ नहीं है बल्कि ज्ञान में ऊपर खड़ा है। संक्षेप में, हम पाते हैं कि शिक्षा की वर्तमान प्रणाली में सुधार या शिक्षा में भ्रामक, भौतिकवादी सांसारिक दृष्टिकोण को हटाना एक तत्काल आवश्यकता है। इसके लिए हमें शिक्षा की जैन अवधारणा को अपनाना और लागू करना होगा।

निष्कर्ष

जैन धर्म में शिक्षा जैन जीवन के अभिन्न और आंतरिक तरीके से है। हम जानते हैं कि केवल तथ्यों और आंकड़ों या सूचनाओं को सीखना ज्ञान नहीं है और केवल ज्ञान शिक्षा नहीं है। शिक्षा में ज्ञान, दृष्टि और ध्वनि चरित्र शामिल हैं। यह शिक्षा जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य यानी मुक्ति को प्राप्त करने का साधन है। धर्म के रूप में जैन धर्म और भारतीय दर्शन की एक प्रणाली जीवन का एक तरीका है। जैन जीवन जीने का अर्थ है अपने आप को शिक्षित करना और पूर्णता की ओर अग्रसर आत्मा की उच्च गुणवत्ता का विकास करना, और दर्द और पीड़ा से मुक्ति प्राप्त करना। जीवन का जैन तरीका एक नियंत्रित, अनुशासित जीवन है जहां कोई पांच महान प्रतिज्ञाओं का पालन करता हैरू गैर–हत्या (अहिंसा), सत्य (सत्य), गैर–चोरी (अस्तय) गैर–धारण (अपरिग्रह) और सदाचारी जीवन (ब्रह्म चर्य)। जैन शास्त्र में बताए गए गृहस्थ के लिए ये व्रत और अन्य व्रत जीवन को मूल्य उन्मुख बनाते हैं। जैन धर्म एक अद्वितीय ज्ञानमीमांसा प्रदान करता है। जैन धर्म गैर–निरपेक्षता की बात करता है। सत्य हमेशा वास्तविकता के एक या कुछ पहलू का सत्य होता है। सत्य की वस्तु के कई पहलू होते हैं, और सत्य सभी पहलुओं के बारे में नहीं होता है, सत्य आंशिक और सापेक्ष हो जाता है। सत्य या निर्णय जो हम देते हैं वह पूर्ण नहीं है। इस दृष्टिकोण का सहिष्णुता और आपसी समझ के प्रति जबरदस्त अनुप्रयोग है। एक सच्चा जैन अत्यधिक निर्णय और परस्पर विरोधी या विवादास्पद विचारों से दूर रहेगा। यह फिर से शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को संभव बनाएगा। जैन धर्म से संबंधित किसी भी विषय पर कोई भी बात उसके कर्म के नियम के उल्लेख के बिना अधूरी है। वास्तविकता के जैन सिद्धांत का आधार इसकी ज्ञानमीमांसा और इसकी नैतिकता कर्म का नियम है। जैन धर्म इस बात का ध्यान रखता है कि जो जीवन कर्म की परतों को हटाकर संवर (रोकने) और निर्जरा (हटाने) की प्रक्रिया के माध्यम से गतिविधियों से भरा है, वह आत्मा को उज्ज्वल करता है। इस प्रकार एक जैन जीवन शैली अतिवाद से दूर तटस्थता की ओर होगी। जैन शिक्षा न केवल अ–चोट या गैर–हत्या पर जोर देती है; यह क्षमा (क्षमा) और प्रेम (करुणा) पर भी जोर देता है। कोई भी शिक्षा इन बाह्य मूल्यों के बिना पूर्ण नहीं है। जैन धर्म के सार्वभौमिक मूल्य, इसकी नैतिकता और ज्ञान का सिद्धांत, इसका गैर–निरपेक्षता (अनीकांतवाद) और वास्तविकता के कई गुना पहलुओं का सिद्धांत (स्याद्वाद) प्रशिक्षण की एक पूरी प्रणाली को दर्शाता है या जीवन को शिक्षित करता है जो अंतिम और उच्चतम लक्ष्य को पूरी तरह से और पूरी तरह से पूरा करता है। जीवन का।

डॉ० कालिदास नाग, एक प्रसिद्ध विचारक और इतिहासकार, जैन धर्म के एक महान प्रशंसक और एक गहन विद्वान ने 1936 में बहुत पहले लिखा थारू "जैन धर्म आज एकमात्र ऐसे धर्म के रूप में चमकता है, जो विचार और कर्म में शांति और अहिंसा में एक अटल विश्वास रखता है। जैन धर्म का यह महान पाठ, जिसे बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म ने सामान्य

रूप से स्वीकार किया, अभी तक जैन सिद्धांतों और जैन इतिहास के पर्याप्त संदर्भ में सार्वजनिक नहीं किया गया है। लेकिन हम आशा करते हैं कि मानव संस्कृति के इस संकट में जब राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद के नाम पर लाखों लोगों का कत्ल किया जा सकता है, जब अंतरराष्ट्रीयता का उपहास उड़ाया जाता है और चतुर राजनेताओं द्वारा शांति के कारणों का शोषण किया जाता है, तो हमारे भारत के जैन मित्र श्एकश का आयोजन करेंगे। मानवता के लिए भारत के महान योगदान के रूप में श्वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ अहिंसाश। 17 हमारे अंतिम सारांश में यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि शिक्षा की कोई भी आदर्श प्रणाली जैन धर्म में शिक्षा को प्रतिबिंबित करने वाली प्रणाली होने के लिए बाध्य है।

संदर्भ:

1प डॉ. विंटरनिज – जैनिज्म के सार्वभौमिक संदेश पर एक लेख में श्री कालोयदास नाग द्वारा उद्धृत – जैन जर्नल में प्रकाशित, वॉल्यूम 1] एनपीएस 1967– वॉल्यूम में पुनर्मुद्रित। 35 नं। 4 अप्रैल 2001

2. हेस्टिंग जेम्स (संपा.)रू ष्धर्म और नैतिकता का विश्वकोशष पृष्ठ 125

3प डॉ. एस राधाकृष्णनरू एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ पृष्ठ 134 देखें श्समकालीन भारतीय दर्शनशास्त्र जॉर्ज एलियन एंड अनविन लंदन, 1952 पृष्ठ 486&487

4प रॉस जे.एफरू श्रिलिजन इन नियो स्कॉलैस्टिक ट्रेडिशनश पृष्ठ 121

5प श्री हरभद्र सूरीरू श्री भानुविजयजी द्वारा श्ललित वसाराश वॉल्यूम ८ कमेंट्री पी 20 12– डॉ एस राधाकृष्णनरू श्इंडियन फिलॉसफीश वॉल्यूम ८ पी। 399

6प डॉ जे पी जैन ष्जैनियों का धर्म और संस्कृतिष भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 102&103

7प श्री अरबिंदोरू श्री अरबिंदो वॉल्यूम के संग्रहित कार्य, श्री अरबिंदो आश्रम, पोंडेचेरी पृष्ठरू

8प प्रोरू नॉर्मन सी डॉसेट (एड) ष्एजुकेशन ऑफ द फ्यूचरष 1996 पृष्ठ 10

9प डॉ कालिदास नागरू श्जैन धर्म का सार्वभौमिक संदेशश – जैन जर्नल वॉल्यूम। 1 नंबर 3] 1967।